राष्ट्रीय संगोष्ठी
जल संस्कृति और साहित्य

11-12 नवंबर, 2024

आयोजक :

हिंदी विभाग

मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर

एवं

केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा

संगोष्ठी संयोजक :

डॉ. नवीन नंदवाना

अध्यक्ष, हिंदी विभाग

मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर

(राजस्थान) 313001

मोबाइल : 9828351618

E-mail : seminarhindimlsu@gmail.com

website : www.mlsu.ac.in

Registration link :

https://forms.gle/pUYEfM5NMJq8eM5D8

आधार विचार :

भारतीय आध्यात्मिक एवं लोक जीवन में जन्म से लेकर मृत्युपर्यन्त जल की महत्ता सर्वविदित है। विश्व की अनेक सभ्यताओं का जन्म, पल्लवन एवं विकास नदी-घाटियों में हुआ। गंगा-यमुना का सतत् प्रवाह भारतीय संस्कृति का प्राणाधार है। हमारे आराध्य श्री राम व श्री कृष्ण का जीवन जल संस्कृति से गहरा जुड़ाव रखता है। हमारी प्राचीन ज्ञान परंपरा में जल की महता का उल्लेख है। ''पत्रं पुष्पं फलं तोयं तो में भक्तया प्रयच्छति। तदहं भक्त्युपहृतमश्नामि प्रयतात्मनः।। (गीता - 9वाँ अध्याय, 26वाँ श्लोक)।

भारतीय भाषाओं के साहित्य में भी जल की महत्ता के साथ-साथ उसके विविध स्रोतों यथा- नदियों, सरोवरों, झीलों और सागरों-महासागरों को आधार बनाकर अनेक रचनाओं का सृजन किया गया है। 'बहता पानी निर्मल' और 'बिन पानी सब सून' जैसी सूक्तियाँ आज भी हमारे समाज में प्रसिद्ध हैं। हिंदी का प्रसिद्ध महाकाव्य 'कामायनी' भी जलप्रलय की घटना से ही आरंभ होता है। हिंदी साहित्य के कथा एवं कथेतर साहित्य में 'सौंदर्य की नदी नर्मदा', 'अमृतस्य नर्मदा' जैसी कालजयी रचनाएँ जल की महत्ता दर्शाने के साथ-साथ आधुनिक समय में जल संरक्षण एवं संस्कृति के प्राचीन भारतीय विचारों का पोषण करती हैं।

इस संगोष्ठी के माध्यम से भारतीय संस्कृति में जल की महत्ता पर संवाद होगा साथ ही जल संस्कृति और लोक जीवन, भारतीय गाँवों के विकास में नदियों एवं जलाशयों की भूमिका तथा वर्तमान भारतीय समाज में जल और पर्यावरणीय संकट पर विचार और समाधान की दिशा में साहित्य की भूमिका पर भी बातचीत होगी। हिंदी के विविध कालखंडों में जल आधारित रचनाओं पर भी विचार-मंथन होगा।

उपविषय :

1. प्राचीन एवं मध्यकालीन काव्य में जल संस्कृति।
2. आधुनिक हिंदी काव्य में जल संस्कृति।
3. समकालीन हिंदी कविता में जल संस्कृति।
4. हिंदी काव्य में जल संकट पर चिंतन।
5. हिंदी कहानियों में जल वर्णन।
6. हिंदी उपन्यासों में जल संस्कृति और जल संकट।
7. लोक साहित्य में जल संस्कृति।
8. हिंदी के कथेतर साहित्य में जल संस्कृति।
9. हिंदी के नदी केंद्रित यात्रा-वृत्तांत।
10. प्राचीन जल-स्रोत और उनका महत्त्व।
11. राजस्थान के प्राचीन जलस्रोत और लोकजीवन।
12. तीर्थ-पर्यटन-संस्कृति और जल।
13. भारतीय चिंतन परंपरा में जल।
14. भारतीय गाँवों के विकास में जल स्रोतों की भूमिका।
15. अन्य संबंधित उपविषय।

पंजीयन :

- पंजीयन शुल्क : शिक्षक एवं अन्य : 1200 रुपये, शोधार्थी : 1000 रुपये और विद्यार्थी : 800 रुपये।
- पंजीयन शुल्क विभाग में नकद जमा करवाया जा सकता है अथवा Head, Department of Hindi, M.L.S. University, Udaipur, Raj. के खाते में सीधे ICICI Bank, MLS University, Udaipur के खाता संख्या 694201437677 IFSC Code – ICIC0006942, MICR 313229007 में भी जमा कराया जा सकता है।

भुगतान के लिए QR कोड

- गूगल फॉर्म के माध्यम से अपना पंजीयन करना अनिवार्य है। Registration link : https://forms.gle/pUYEfM5NMJq8eM5D8
- ऑनलाइन पंजीयन के दौरान पंजीयन शुल्क की रसीद अपलोड करना अनिवार्य है।
- जो प्रतिभागी अपनी राशि विभाग में नकद जमा करवाएँगे उन्हें भी ऑनलाइन पंजीयन करवाना होगा और उन्हें अपनी पंजीयन रसीद की प्रति अपलोड करनी होगी।

अन्य जानकारियाँ :

- पंजीयन की अंतिम तिथि 20 अक्टूबर, 2024 है।
- आलेख कृतिदेव-10 या मंगल यूनिकोड फॉन्ट में टंकित होने चाहिए।
- आलेख भेजने की अंतिम तिथि 31 अक्टूबर, 2024 है।
- संगोष्ठी दिवस पर आपके भोजन की व्यवस्था आयोजकों द्वारा की जाएगी।
- संभागियों को आवास व्यवस्था स्वयं के स्तर पर करनी होगी। इस संबंध में किसी प्रकार की सहायता चाहने पर विभाग आपकी मदद कर सकेगा।
- चयनित शोध पत्र यूजीसी-केयर सूची में शामिल पत्रिका 'गवेषणा' या संपादित पुस्तक में प्रकाशित किए जाएँगे।
- संभागियों को किसी प्रकार का यात्रा-भत्ता आदि देय नहीं होगा।
- बिना उपस्थिति के किसी भी परिस्थिति में प्रमाण पत्र देय नहीं होगा।
- संयुक्त शोध पत्र होने पर सभी लेखकों को पृथक-पृथक पंजीयन करवाना अनिवार्य होगा।

मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय :

उदयपुर में मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय (तत्कालीन उदयपुर यूनिवर्सिटी) दक्षिणी राजस्थान में उच्च शिक्षा की जरूरतों को पूरा करने के लिए वर्ष 1962 में एक अधिनियम द्वारा स्थापित एक राज्यीय विश्वविद्यालय है। राजस्थान के पूर्व मुख्यमंत्री स्व. श्री मोहनलाल सुखाड़िया की स्मृति में सन् 1982 में इस विश्वविद्यालय का नामकरण मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय किया गया। अपनी स्थापना से ही यह विश्वविद्यालय शिक्षण, अनुसंधान और सामुदायिक सेवा के क्षेत्र में उत्कृष्टता बनाए रखने के लिए प्रयासरत है। उच्च नैतिक मूल्यों, वैज्ञानिक सोच पैदा करने और उच्च शिक्षा के उभरते हुए क्षेत्रों के साथ तालमेल रखने की दिशा में भी विश्वविद्यालय संकल्पवान है। यह विश्वविद्यालय सूचना प्रोद्यौगिकी का शिक्षा, शोध व प्रशासनिक स्तर पर अधिकतम उपयोग करने में अग्रणी है, साथ ही भौतिक आधारभूत सुविधाओं एवं ई-पुस्तकालयों की दृष्टि से भी समृद्ध है।

केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा :

'केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा' शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार के उच्चतर विभाग द्वारा 1960 ई. में स्थापित स्वायत्त संगठन केंद्रीय हिंदी शिक्षण मंडल द्वारा संचालित शिक्षण संस्था है। संस्थान मुख्यतः हिंदी के अखिल भारतीय शिक्षण-प्रशिक्षण, अनुसंधान और अंतरराष्ट्रीय प्रचार-प्रसार के लिए कार्य-योजनाओं का संचालन करता है। संस्थान का मुख्यालय आगरा में स्थित है। इसके आठ केंद्र यथा-दिल्ली, हैदराबाद, गुवाहाटी, शिलांग, मैसूर, वीमापुर, भुवनेश्वर तथा अहमदाबाद में सक्रिय हैं। वर्तमान में प्रो. सुरेंद्र दुबे, केंद्रीय हिंदी शिक्षण मंडल के उपाध्यक्ष हैं और प्रो. सुनील बाबुराव कुलकर्णी, केंद्रीय हिंदी संस्थान के निदेशक हैं।

आयोजक मंडल

संरक्षक

प्रो. सुनीता मिश्रा
माननीय कुलपति
मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर

प्रो. सुनील बाबुराव कुलकर्णी
निदेशक
केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा

सह संरक्षक

प्रो. हेमंत द्विवेदी
अधिष्ठाता

प्रो. मदन सिंह राठौड़
अध्यक्ष, मानविकी संकाय

संगोष्ठी संयोजक

डॉ. नवीन नंदवाना
अध्यक्ष, हिंदी विभाग

सह संयोजक

डॉ. नीतू परिहार
सह आचार्य

डॉ. आशीष सिसोदिया
सह आचार्य

डॉ. नीता त्रिवेदी
सहायक आचार्य

संपर्क :
डॉ. नवीन नंदवाना
विभागाध्यक्ष, हिंदी विभाग
मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर (राजस्थान) 313001
Mobile : 9828351618, E-mail : seminarhindimlsu@gmail.com
website : www.mlsu.ac.in